

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ४५७८

Title त्रिशत-श्लोक्या ग्राशौच संग्रह व्याख्या
प्राकृत भाषायाम्

Author *

Extent ८ पत्राणि Age *

Subject धर्म शास्त्रम्

त्रिंशत्सुक्ता व्याख्यानच संग्रहव्याख्या

प्राकृतभाषायां

४५७४

५५७९

४

पुस्तक

धनस्त्रीगणेश्वरदेवसाढदांगुरुमात्म
 नः॥ श्रावौचंसयद्वन्निशत्स्योकार्थ
 करोम्यहं॥१॥ षण्मासान्यतरेष्विति
 दीकाज्ञातयात्रालेतेमूढमतिप्रदा
 तथेलिरयते॥ मासछा॥१॥ माहेपोता
 नात्तत्तरिनोगर्जनाशपांमेतोमाता
 मास३सूवीदिन३सूतकी॥ चोषोयं
 चमोछटो॥१॥ पा॥१॥ एचोषो॥१॥ दिन
 पांचमे॥ पाछटो॥१॥ मातानेसूतकहे
 ए॥ पितानेपाचमोछटानो॥ पा॥१॥ गर्ज
 पजेतोदिन॥ शतथासापिउनेस्ना
 नमान्त्रां॥ सूतकनहि॥ अंत्यनामा
 सा॥ शिवे॥ पाचमोनेछटोएबेम्मास
 त्रुषुषावहितस्यत्रिदिनश्च
 मास॥१॥ सात॥१॥ श्राव॥१॥ नवए
 लेशात्रसूतिकापिताप्रतिसापिउ
 सूतकंदशाहं॥ वए॥१॥ चारसामा
 न्यचखेछे॥ येचखेनेचखेविनक्ति
 हरोतेक॥ हाछेनामघ्णज्ञातक
 मउपवीतएचयनेचखेवधवएनिमा
 मान्यसूतकहेए॥ इदा॥ नी॥ ए॥ मि
 श्राव॥१॥ जन्माशौचांतराले॥ अस्या
 र्थः॥ जन्मानादशान्निमाहेजोवाल

कपरेतथानालवधेराष्ट्रेअथवामू
 जणेतेदेडजण्डसूतकमावापसा
 पिउनेदशरात्रहोएमूआनुशबस
 तकनोदे।नात्रिष्ठेद्यापेहेल्लमेरेतोमि
 तानिडुरुषविशयेदशरात्रं।सापिजा
 नानिगत्रं।मातापिडःपितुःउदशरा
 त्र।सापिजानास्नानत्रिरात्रमाशौचं
 पिडविषयेदशादशाहंसिद्धातम्
 आनुउतेरेवयोबम्हाविषयेदपि
 ॥२॥ ॥स्नानं प्राप्तामतोर्वाअस्या
 र्थः॥रुशिवेदानामकरदशरात्रि
 माटेम्भुहोएकेवलस्नानमूआ
 न्।जातशौचंएणीएकादशेदि
 यहाशुमासछ।६।मागीसद्यःस्ना
 नशुचं पिडनेपक्षिणी॥१॥द्यागे
 डोवादांतआचाष्टेववर्षन् एणपर्य
 तचूडाकरकनकाधूहोएतनेएकरा
 त्रिसूतकःद्वौवषेद्वौमासहीनौन्
 मिदग्धकरोतियः।एकरात्रिसूतक
 सापिडने।पिताने॥१॥डोछ।त्राज
 विष्णुतर्पण।चूडाकरणाडध्वविषप
 त्रिष्टेवदाहाकीजेष्ठद्विशतिमा
 सप्राप्तषट्पिडान्कारयामासा॥२॥

त्रिवीसस्थातहेनेदाहकरवो। त्रिरा
 त्रिस्तगकरचुपितामहितदशाह
 पिउत्रिजेदिवसकरेचोद्येविष्णुत
 पण। दिकरे। जनात्सधूपंचवषडि
 परातवृषोत्सर्गएकादेशेकिंकमचि
 दुर्थेदिवसेसमापनियं॥३॥ ऊन
 दयहेत्वमज्ञे। अस्यार्थगोवेवषनि
 थां होएनेमूर्द्धमाबापनाइएहेने
 त्रिदिवसा। अथवासापिंडनेएक
 रात्रंदाहाहउच्छ्रित्तिरात्रं। कर्मधि
 कारेदीकरीनेपिठव्यतिरिक्तस्ना
 नमात्रं। वाक्दानहउआपूठेमावा
 पगोत्रिनेतथातत्ररिन्गोत्रएस
 किंकोनेदिना। ३। त्रयस्तक। वा
 क्दानहउआपूठेपरणपोस्तध
 ॥४॥ ॥ जन्मन्यौपेतमृत्यास्याअर्थगो
 जने। इदिधापूठेमेरतोब्राह्मणेनेद
 शारात्रि॥४॥ हत्रिनेदादश॥१२॥ वैश्य
 नेपंचदश॥१५॥ शूद्रने॥१५॥ अनाचारी
 शूद्रनेमास॥१॥ पोतानाकुलनेवान
 प्रसूद्धोएतथायातीहोएतथान
 उंसकएत्रयन्स्नानमोअर्थतक

हिस्त्रिगायामन्गहो एते ब्राह्मणे
 अर्थमूर्द्धहो एते हेतुस्तक एक रात्रि
 हो ए। युधे मृन्त्रो ते नृसद्यस्नानशुद्धिः
 ॥५॥ शाबोतीते। अस्मार्थः॥ ॥ विदे
 शमरेने दशरात्रिष्टवे मां जले तो। नि
 मास पर्यंत पक्षिणी शाब्द एक रात्रि
 एक दिवस वीजी रात्रि एवे दीनयो मे
 छ मास छवे नवसूधिए करान्नं नव
 छवे स्नाने पिष्ट विषये मा बापने देश
 जे। पुन ही श्रुत्वा तद्दिनमारच्य दश
 हस्तकं जलेत्। मा बापलु परदेश
 व्यावर्त्तये मां जलु तो हे दशरात्र
 लु तो हे दशरात्रस्तकं सपत्न्यमा
 तन्व उत्रं एष दिवशेषु छ। एस्तक
 दशरात्रिष्टवे ध चारव एने शरव
 गक्ष॥ ॥ पित्रो गेहि समृद्धा अस्मार्थः॥
 पिताने धर परणी दा करी ज्येणे अथ
 वा दी केरी मरे तो पिता न्राता ने यणे
 एक रात्रि। मृ ए त्रिरात्रि। अथ वा पि
 तान् मरण है। ए तो दी करी ने त्रिरा
 त्र मातान् त्रिरात्रि। आचार्य माता
 मृह्नु दो हि त्रने त्रिरात्रो माता म

दनेत्रिगत्रदोहित्रनु। श्रोत्रित्विजु।
 नागिनेया। नाणेजएहनं एकरात्र
 स्तकं। दोहित्रनेमाता। मेहिउ
 पक्षिणावपनवेनु॥७॥ ॥ पक्षिणा
 शोशंअस्यार्थः॥ एकरात्रिएकघा
 गोबीजीरात्रिएटलोनूहोएतेहेन
 मतएकेएकरात्र। त्विजुदोहित्राम
 धातेनएते। माशाईफोइन्नाईमा
 लाईएवधुत्रयत्रंतेवासी। श्वश्रुजे
 त्रिना। मसरो। बनेवी। नाणेजामा
 ताम। ही। फोइ। माशी। मोमो। मोम।
 एहनूपक्षिणी। अथवाएकरात्रि
 सूर्यतत्रेदेशनास्वामामेरेतेनूस्
 र्यअथमेतरउतस्तक। चइमा
 उगतेमेरेतोचंद्रस्तेउतेरो। ग्राम
 नाधणामूअहोएतोहसूर्यअ
 थमेउतेरो॥८॥ ॥ त्रिषोपाध्याय
 अस्यार्थः॥ ॥ विद्यार्थीउपाध्या
 य॥ फोइमाहालाइमाशाइउगु
 रुतनयायुरुनीस्त्री। वेदिअब्रा
 ह्मणपोतानेघेरमेरेअथवामामा
 नूएकरात्रस्तकहोए। ब्रह्मच
 राजोस्वगोत्रमाहेहोएतोब्रह्म
 वारीअनेवस्त्रमहितस्नानएक

३
 गान्नस्तकवर्णिने॥१॥ बघाशौचेस्य
 मध्येऽस्यार्धः॥ पेहेलु एकस्तकद
 शद्याछेबाजुदश्यागंनुपडे। अथवा
 त्रिरान्ननूपडेस्वजातिकेतामूः
 पडेतेमादेमूःत्रानूपडे। अथवाज
 एयान्। स्तकमादेयएयानूपडेतवा
 रापेहेलुछेतउतरेत्यवारांबाजुउत
 रा। अथवायएयानास्तकमादेदशरा
 मृतस्तकउतरे। पेहेलुमृतस्तक
 कहे। एकपिजन्मनस्तकपडेतो।
 मातपिताद्यतिरिक्तसर्वनेवधउत
 रेतवाराजातउतरे। पेहेलुस्तकए
 करा। त्रिथाउहोपिनेबाजुपडेतो
 दिन२बेअधिकपालेजो एकव्रह्म
 शर ऊयूहोएतोदिन३त्रएयअधि
 कपालेपितानास्तकमादेमाता
 मेरेतोपितान्स्मयोजनकिधाफे
 मातान्जेढद्याढोपहिणीवालीमं
 नस्तककरे। वपनादिमवउद्धत
 याकरे॥१॥ मातर्यथप्रमितामाम्
 शुद्धौ म्रियतेपितापितुःशेषणशु
 द्विःस्यान्मातुःऊर्यान्निपहिणी॥
 एश्चाकार्थः। मातानास्तकमादे
 पितामेरेतोपितानाद्यादेशदपयति

तल्लयाकर्म करीनेवाली मातान् जो
दाणेसूतकारी वपनादिसर्वजईत
याकरे ॥१॥ ॥ सर्वचित्रैचमत ॥ अ
स्यार्थः ॥ ॥ बेहूस्तकमाहेपडेतो
जन्माशौचमाहेय एतेजन्माशौच
उतेर। मृताशौच एपांलनु। अग्नि
होत्रीने। दाहाबीजेघोठे अथवात्र
जिह्वाठहजुं होयतोयेदिवसदा
हकीध्वाहोस्तकपालकमृतादि
वसहरोते एदिनेमासिकादिक
केर मृतांदिन शुसूतकनहीदाह
पालेबीजे। मावस्त्रेसाथेस्नानके
स्त्रीप्रसूतिकादशदिन पश्चात्मास
एकसूधी अशुधं देवपितृकार्येन अ
त्रप्रसूतिकादशदिन पश्चात् विरा
तिदिन मशुधं ज एथीस्त्रीय एवाली
सदीन मशुधं। पुत्रीय एथीमासपयं
तमशुध ॥१॥ ॥ निईत्यान्यप्रमा
ति। अस्यार्थः ॥ ॥ कुटंबनापारवेहा
वनेजपाडे त्रिगानसूतकतेनेहोए।
मालजसाहेतेने एकरात्र। अग्नि सस्का
र करेतेने दशरात्रि। हनिनेजपाडे

तोपंचरात्रवैश्यनेउपाडेतोदशरा
 त्रस्तकाम्शूदनेरावस्यरेडिनसं
 स्काराश्चनाथद्वेतसंस्कारदोषनही
 श्रनाथदाहकाजे।अग्निहोमफल
 लजेत।स्नानेशुद्धिउपाधाय।गुरु।
 ब्रह्मचारी।मातापिताश्रमदाधाय
 एहनेब्रह्मचारितथाजतिउपाडेतो
 उषणनाहीया।तीयेवं॥११॥१२॥ ॥
 तुल्योक्त्याह्याने।अस्यार्थः॥॥
 ब्राह्मब्राह्मनेबालवाजाए।अथवा
 दानवएउतमवएनिश्चेजाएतोव
 स्त्रसद्योतेस्नानकोरे।वैश्वानरस्यरकि
 रेलिबपत्रघृतप्राशनकोरे।ब्राह्मण
 हातवएश्चेजाएतोहतिश्चेजाए
 तोपक्षिणीपाले॥चैरयश्चेपोतोत्रि
 रात्रपालेक्षूद्रश्चेजाएतोत्रिरात्रतथा
 पक्षणी॥एवेदिता॥पापंचमशुद्धं।ब्राह्म
 णक्षूद्रश्चेपोतेनेपंचरात्रस्तकन
 हीवेस्वरातप्राणायामेक्षूद्धं॥१३॥ ॥
 तावाचार्य॥अस्यार्थः॥ ॥ब्रह्मचारीथ
 वाराथकोपितामाताश्राचार्यपिता
 महब्रह्मचारीया।ताराहनेसंस्कारक

रबाले तिलोदक दशादित्य करे ते
 नृदाघन ही बीजा को ने दाहा तथा क
 या करे तो वाली जिने ई देव रावे ब्राह्म
 नी च व ए नि अग्नि संस्कार करे तो त्रा
 न्क छ चां प्राय ए लं ते शुद्धं ॥ १४ ॥ पासा
 रा मा ही ता ये ॥ अस्यार्थः ॥ १ ॥ अ
 ग्नि होत्रा पर देश पर देश मूर्ध हो
 ए अग्नि स्थि नो हे तो पीला शवृत ३६
 न ए प मे सा व इ त लु को ए अग्नि प्र
 दान क करी ने दाह करे दशरात्रि
 दशरात्रि सूत का अग्नि स्थि पा म्या तो
 षट् पि उ दि अग्नि ते य गि करी ने प्राय
 स्थि त र्व क दाह करे अग्नि होत्रा
 ने दाहा ले रे सूत क करे निरग्निक
 नो इ त लो बाल्यो हो ए तो सप्त शुक्ल
 षने त्रि रात्रे शुद्धं ॥ पुत्र ने दशरात्रि पि
 माता न्द मरण ह क छे ने प छे पिता म
 र तो माता न्द लत्य रे द्वा पिता न्द लत्य
 करी ने वाली प हि णि सूत क को द्वा
 इ वे लत्य मानु करे ॥ पे हे लो इ त मूर्ध
 छे दशरात्रि मा हे पिता म र ते हे नी च
 या पि पिता नी ह उ ए ॥ पुत्र नी हो ए व
 ह ता सा सू मू ए रे हे ॥ स्त्री ना न त्र रि म

५
 एरेहे। बीजाको नानरेहे। फतले बाया
 नूत्रि रा छे ते माहे दशरात्रि मरे तो सा
 पिउने दशरात्रि ॥ ५ ॥ पाले। पण शा
 यना स्तक सा रू वृद्ध मरे ते हेनु उतरे।
 अन्य वप्रा ए मूच्य मान हो ए तत वारा
 समीप होय तेने ब्रह्म चार मशुद्ध
 ॥ ५ ॥ जे नमन्य स्य श्यता ॥ अस्मार्थ ॥
 य एषाना ऊटं बाने य एषाना स्तक
 माहे स्य श्य हो ए तो डष ए नही
 बीजा स्त्री वस्तु की काने वस्य श्य कि
 रते दिन १० दश मशुद्ध। माने अज हो
 ए तो वस्त्र संघात सा स्नान कीजे
 ते हेनो बाप सांज त्या इवे वस्त्र न स्नो
 स ही त शुद्धि। मूत्राना स्तक माहे
 अजी ए नही। दशरात्रि स्तक हो
 ए ते हेना जाग अण्य करी ए ते नो पे
 हे लो जागलागी अजी ए नही। स्तक
 छे ते हेने स्य श्य की धे संथान नूड ए
 जा ए। अस्ति सिंचन की धा इहे दोष न
 ही गृहे दासी दास शिष्य जगिनी ए स्य
 श्य करे तो स्नान करावी ए ते गृह मध्य
 जा ए माटे। शाक उदक लेते हेनो हो
 शान ही ॥ ६ ॥ अनै नो पातयोस्तु। अ

स्याथः॥ अनयेदामदासीधरेरेहेअ
 नयमस्यर्यसूतकांननेनकरेनेनि
 रात्रस्तकावेचाथोलीधोहोएते
 निस्वामीनायेठलू। इत्रयएपाधे
 तिघावोउसवकीजे। दामनेस्त
 कनहायतीब्रह्मचारीनित्तानले
 ॥१५॥ ॥ तत्तकार्येष्टु॥ अस्यार्थः॥
 वृक्षाशोचमाहेएटलांकामआरन्या
 होएतोकरवो। राजानूकामआपा
 पएनित्तिजराजएदेशरगथातो
 राखवोआपतावेदजणीएवैदिष्टु
 कामध्यासूनेकामगुरिवाकगायम
 अषधकरवूआरंन्यूहोएतोदानतथा
 यज्ञदिक। शुद्धाशुद्धप्रतिष्ठावएवैदि
 एतोवूडाकर्णीजनेइबिबाहाप
 एचि। तीर्थजिनाजपउसवगमग
 मएटलांवानाआरन्याहोएतोकर
 रजे। सोताद्याफूठस्तकपाले। आ
 पणीसंध्यानित्यआशौचमाहेक
 रतोहोएतेकरे। दीक्षाकरे। कन्याह
 नकरे॥१६॥ ॥ नाशौचाज्ञातयसू
 ॥ अस्यार्थः॥ ॥ एहेवीस्त्रीचूडाहो
 एतेनस्तकनोदेयउपधातिचर्मा

रदीकारो ब्राह्मणवैश्यस्वामी एहे
 नउपवातकरैतै नूस्तोनही॥ वेंती
 येचटलचोरअनाशामीसुगपीनू
 उम्लेछाएटलानूगमनकरैतैस्त्री
 नूस्तकनही॥ गर्वकरीसपनेबाले
 ब्राह्मनाशपेराजामूअहोएतेचांड
 लयोनीपामेपोतेइछाएलोढमार
 कमलइजकरोवैश्वानरपाणीप्रवि
 शअन्तरायंननृगुपातहाहनूस्त्र
 तकनहांदेवपामे॥१९॥ गेनांशौ
 चकाभअस्यार्थः॥ गएटलेवानेस्त्र
 तकनोहे॥ शाकदूधएमडाचर्मम
 हुचारदूवयाणामोमडुषाफलपत्र
 मूलडिषविदधिपथुतिलशेरडीका
 तुंअन्तरसर्वस्वामीनीआशामाग
 नेलीजे। खाइये। तेहेनेहाथेनलेने
 हातथीवस्तुनूस्तकनही॥२०॥
 मातारण्यग्निनावकि॥ अस्यार्थः॥ ग
 जन्मकालनेवेरेवेयेअग्निवडेजात
 कर्मकाधूहोएतेएवैश्वानरेपरण
 तालगिबालीएत्यवारइठेअग्निहो
 नलेयांहोलेगेण्यलानाहोम्याहो
 एलेएबालेअग्निहोननलेवाएतोवि

अ। बालमरेतेने स्नानवृत्तवृत्तकरिने
 दाटे। पितामरेतेने छत्रेन च वस्त्रयुक्त
 पवीतशोभनमाल्यचंदनादिभूजने।
 दाहकरे॥२३॥ अथ गृहारागयगि
 अस्यार्थः॥ गब्राह्मणेने पश्चिमद्वार
 देश। पश्चिमे दाहाकरवाले इजाए।
 क्षत्रिने उत्तरे। वैश्यने पूर्व। शूद्रने द
 क्षण। दाहकरवाचां गरुड। आग
 त्यना। पाछलवलते। नोहाना। आ
 गलवृक्षपाछल। वसुमादे मुउहेए
 तेष्टे अतिवृक्षनाकराबने शूद्रस्य
 शिवाए तथा ऊपाउते। अतथका मूका
 यनहा॥२४॥ गृहातीनां माह। अ
 स्यार्थः॥ एटलोने दशरात्रमाहेपा
 णारे उक्ता पितामाता न्नाता कुटुंब
 गार एहने जलरे उवू। हवे एटलोने
 गमे तोरे जाए। परणी दी करिने न्नाए
 जससरो। सासू मित्रयाचक एटलो
 ने गमे तो जलरे जाए। एटलोने पोण
 रे उवू। सोलवर्ष छुठे जने उदीधू हे।
 ए ब्राह्मचारी व्रतीय तीयतीतकी वेपा
 खजी चोर न्नाष्ट एहने जल दान पिउ

धि ईर्व वैश्वदेव की धे हो एते एो बालो
 तेन पा मे तो लौकी का मि च्छा इच्छते ने
 ले वो ॥ एट ले वैश्वानरे बाल्यो तेन बाल्यो
 तो नाना मः चांडाल ना घर नो झानि
 न ह्यसूतिका नो शुद्र नू इध एन ली
 ज ॥ २॥ ग सर्व तैस्सा विदध्यात् ॥
 अस्मार्थः ॥ जनो ई नो काल गयो अत्र
 पवीत चरे तेने अमे न वत् दा ह करे
 लयान ह ॥ पति तने शुं सा वित्री प्र
 दान तर मो तेने छत्र वृक्ष मंत्र वत् क
 रे अज्ञा वेलो दो ॥ पुत्रा ज्ञा वे पिता ना
 कुल नो करे तेने अज्ञा वे माता मह न
 वंश नो करे अथ वा विद्यार्थी आचार्य
 यो पे ले द्यो छे अर जे ते स्त कां न ल गी
 करे ॥ २॥ ग अज्ञाना म्नाः खान मात्रे ॥
 अस्मार्थः ॥ दश दिन श्रेष्ठ वस अत्र एण
 पो मे न्या हां ल गी डा टी ए वर्ष त्री जू पा
 म्या श्रेष्ठ बाली ए दा द्यो जली का जे ॥ वृ
 डा कर ए का धु हो पै ए तो न की धू हो ए
 तो अने पिता मे रत्य वारा छत्र पां ए सं
 स्कार करी वा ए ॥ वैदक मंत्र अन्य न च
 अथ वा स्व कुल निहित क्रिया सर्व करे ॥

दानादिअधिकनही॥२५॥ १
 संस्कृत्यानाद्यमाणा॥अस्यार्थः॥
 बाल्याष्टवेपाठुनजे॥३॥ बालकने
 आगलकरीनदीएस्मानेअमेत्रवत्
 सवौलापारवाएजणेरअंजलीउत्त
 एयदायांजलिप्रेतराहेनरे॥अत्र
 स्नानकरे॥सर्वगोत्रीगा॥आगल
 थाएदायाजलीब्राह्मदक्षणाति
 पुरवावेशीनांरेवाहन्तिनेउत्तरे॥
 वैश्यनेष्टवेगृहप्रवेशा॥२६॥ १
 स्नायुर्नूयिपित॥अस्यार्थः॥ १
 कटंबीदिन३अत्रएवेचाउत्पद्य
 नियमेदगंनवर्जमिथुनसपिथु
 तंलुक्तं॥एटलांवर्जवा॥मास॥लव
 णा॥दूधहार॥मन्त्र॥स्त्रीसंग॥मांग
 त्या॥द्यमनहास्यउचेन्प्रासनेनवे
 सउचैःस्वरवाक्य॥शयाशयनएद
 वर्जंनिष्पपाथनेनमिश्रायन॥द
 पप्रज्वालदशरात्रसूधी॥२७॥ १
 संस्कृतिदिर्नडिजे॥अस्यार्थः॥जेले
 दाहकाधोहोएतेदशरात्रीदिर्नजि
 जेमधुदशनांनासयुक्तपिंडकरे
 अजलीनांरेवदशरात्रिथेने॥१००॥

शतकई एणं तेल कल्क स्नान करवो ॥ अ
 स्थि सिं वन न्रीजे ॥ मात मे न व मा स्त
 धी की जे ॥ युग्म दिन वज्जी ॥ २५ ॥ वषी
 य स्यु डते त्वा ॥ अस्थार्थः ॥ वृधा शौचे
 आप ए था वडा हो ए ते ने स्त कां ते
 वपना करा व वृ पिता माता पर मा ॥
 पिता म द ए ह ने ॥ आ ए मु क्ति ह उ अ
 छे ॥ छ ने व पन करा वी ने षट् पि उ क
 र वा ॥ स्त कां ते धनः व पन ए का द शे
 क्षि प्रा ह्ये य म स्व गृ हे प्र वे श दो श शी
 ती र्थ दी न र कर क ॥ ब्रा ह्म ने पू जा क
 रा स्व स्व य न न ए वा दी न की जे ॥ २६ ॥
 दत्वा पिंड स पिंडा ॥ अस्थार्थः ॥ स र्व
 कुटं बे प्र त न पि उ ना द ज ल ही प दे श
 पो ता ने धे र जा ए च वा रा णा ग दे इ नि
 ॥ अग्नि स्थ र्श ति था लि व प न वृ त प्रा श
 न करी आ च म न ले प छे पा णी दो वृ ष
 न ने त था अ ह त गो म य स्थ र्श करे आ
 च म ने ॥ सूर्य स्थ धा न ॥ २७ ॥ ॥ इ ती
 त्रि शत श्लो क ना षे प्रा क्त तो न स य
 मं ॥ ६ ॥ एं सि मा त्त तः ॥ ॥ श्री र सु
 ॥ ॥ शु चै त्त व ड ॥ ॥